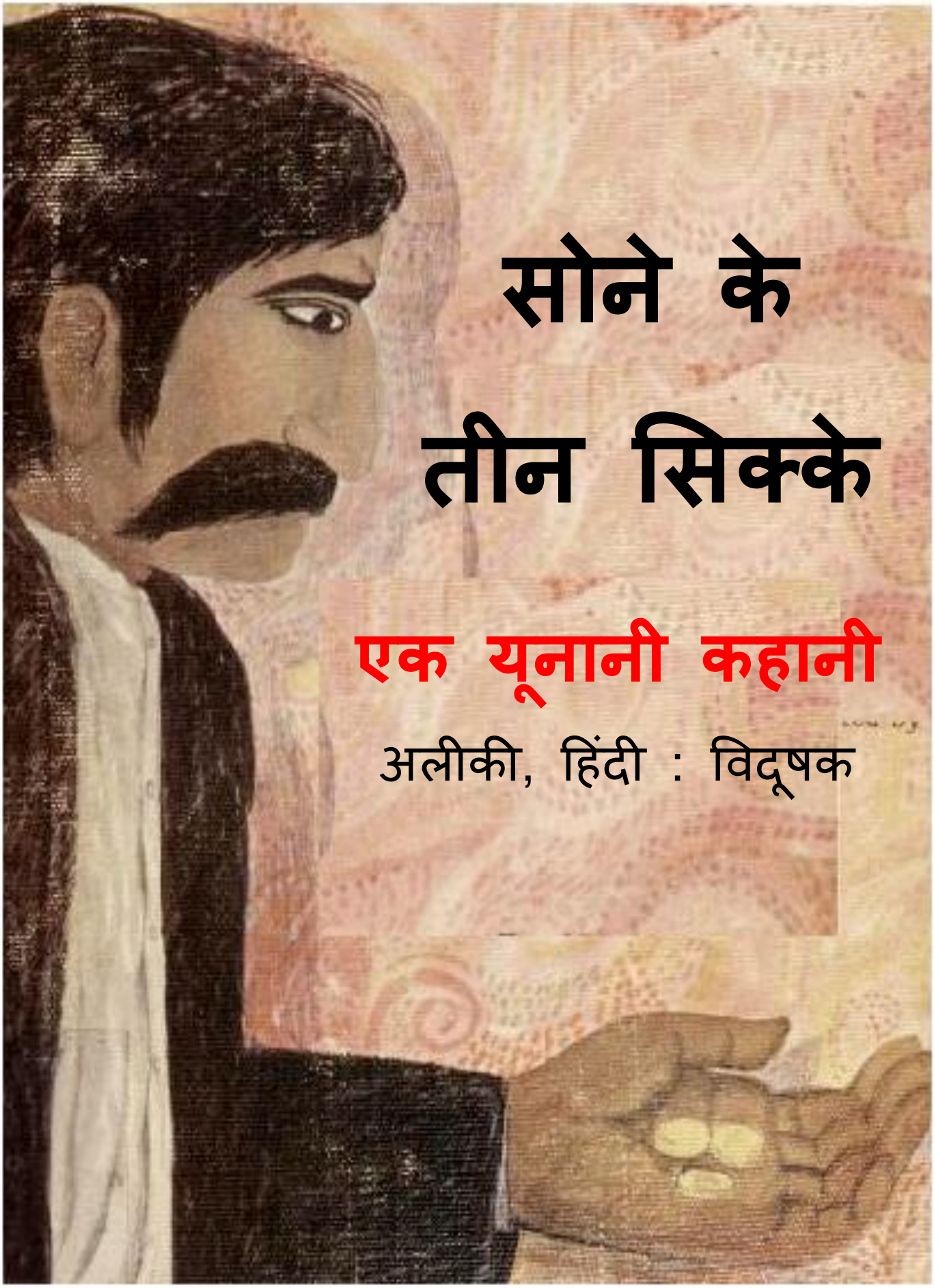

सोने के तीन सिक्के

एक यूनानी कहानी

अलीकी, हिंदी : विदूषक

अलीकी के कई यूनानी कहानियों को दुबारा सुनाया है और उनके लिए सुन्दर चित्र भी बनाए हैं.

ये यानिस नाम के एक गरीब किसान की कहानी है. यानिस ने बहुत सालों तक एक रईस आदमी के लिए काम किया. यानिस को उसके मालिक ने उपहार के रूप में तीन सोने के सिक्के दिए. यानिस ने उन सिक्कों को कुछ मूल्यवान बातों के लिए बदलला उससे उसकी दयनीय स्थिति, खुशहाली में तब्दील हो गई.

अलीकी ने इस कहानी में ग्रीस (यूनान) की झलकियों को अपने सुन्दर रंगीन चित्रों में बखूबी उतारा है.

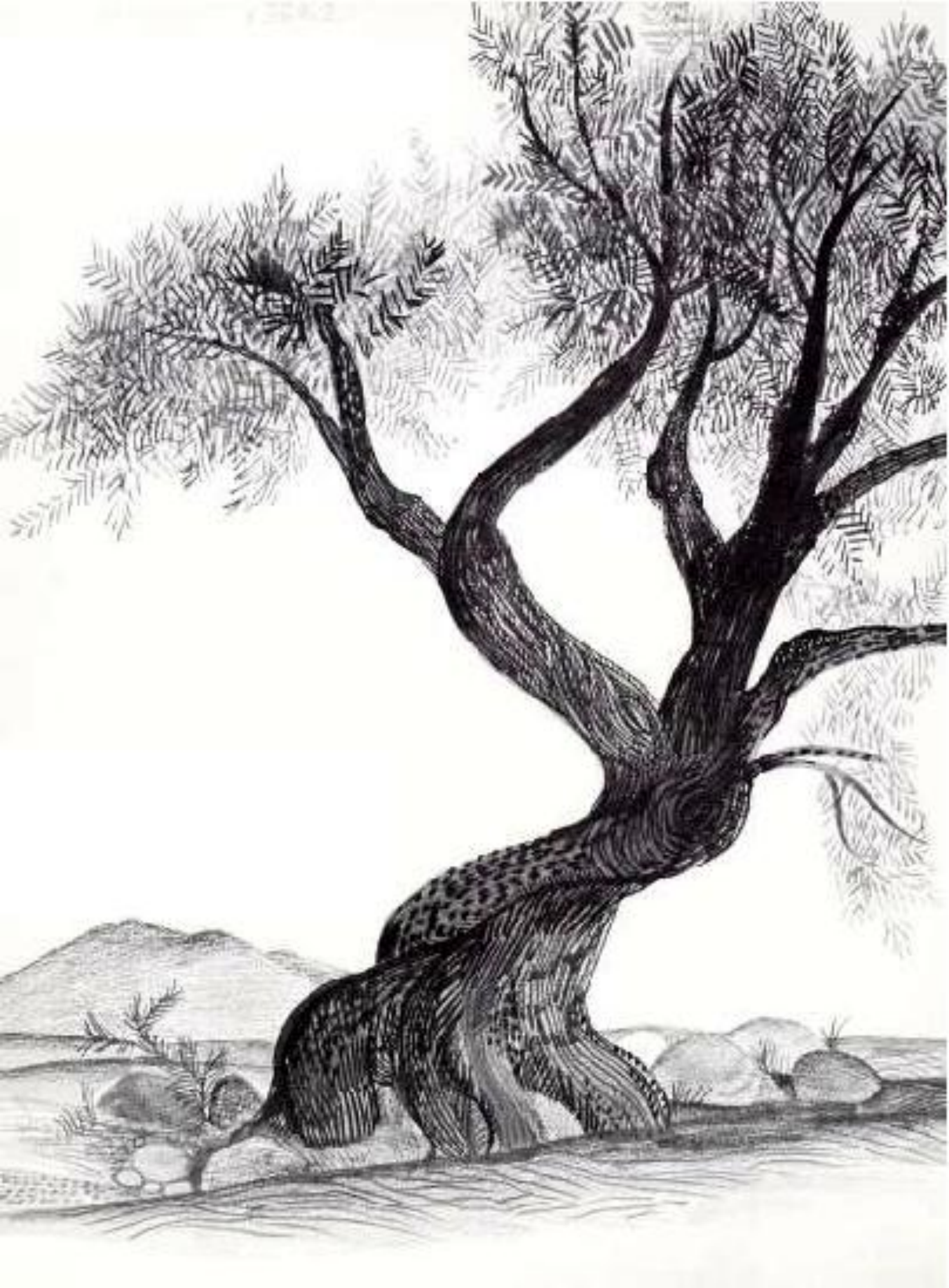

सोने के तीन सिक्के

एक यूनानी कहानी

अलीकी, हिंदी : विदूषक

First Printing © Copyright, 1967, by Aliki Brandenberg. All rights reserved under International and Pan American Copyright Conventions. Published in New York by Pantheon Books, a division of Random House, Inc., and simultaneously in Toronto, Canada, by Random House of Canada Limited. Library of Congress Catalog Card Number: 67-14228 Manufactured in the United States of America.

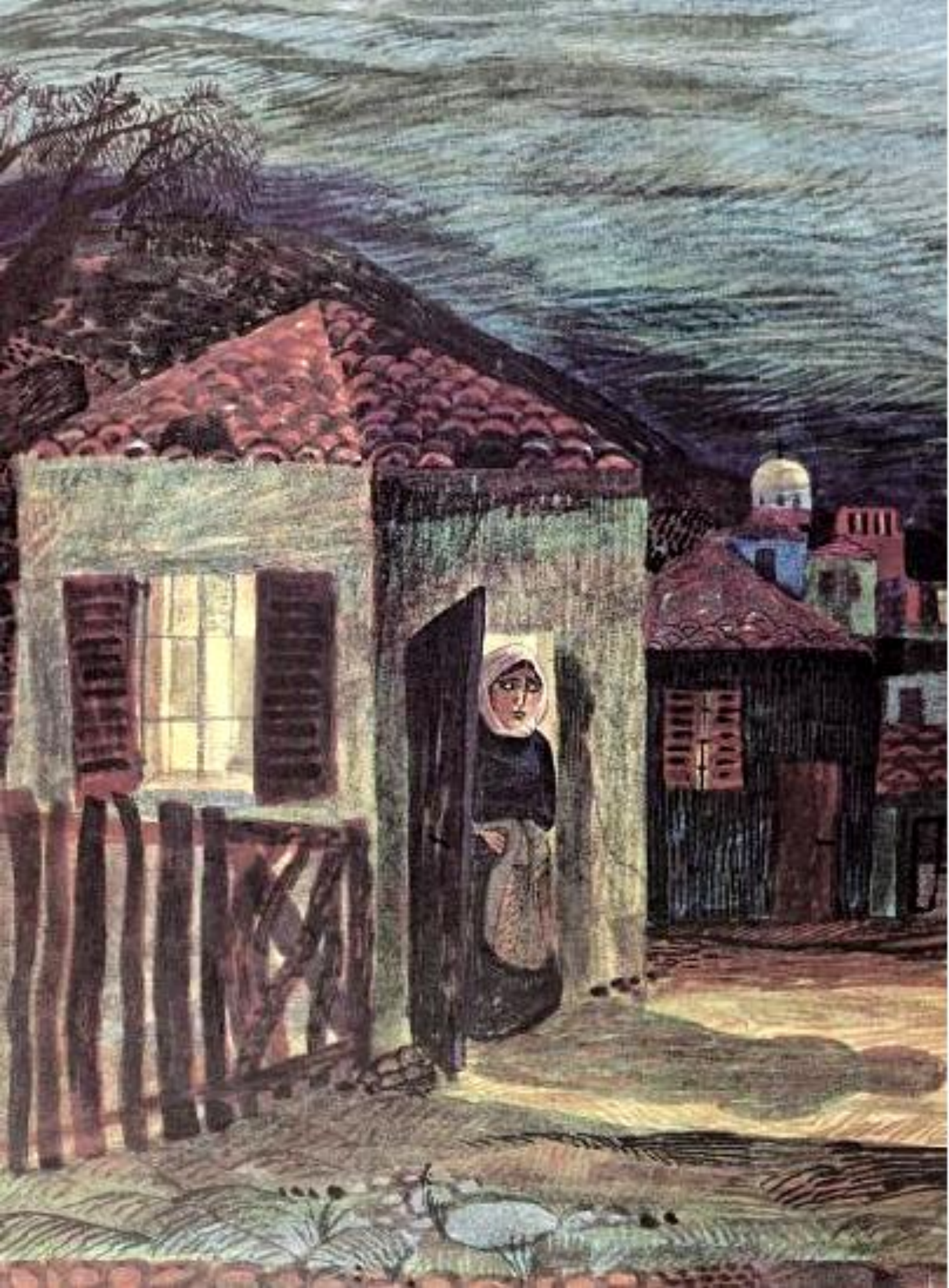

ग्रीस (यूनान) के एक गाँव में यानिस नाम का एक गरीब आदमी रहता था. वैसे तो यानिस सुबह से शाम तक कड़ी मेहनत करता था, पर उसके बावजूद वो अपनी पत्नी और बेटे के लिए खाना नहीं जुटा पाता था.

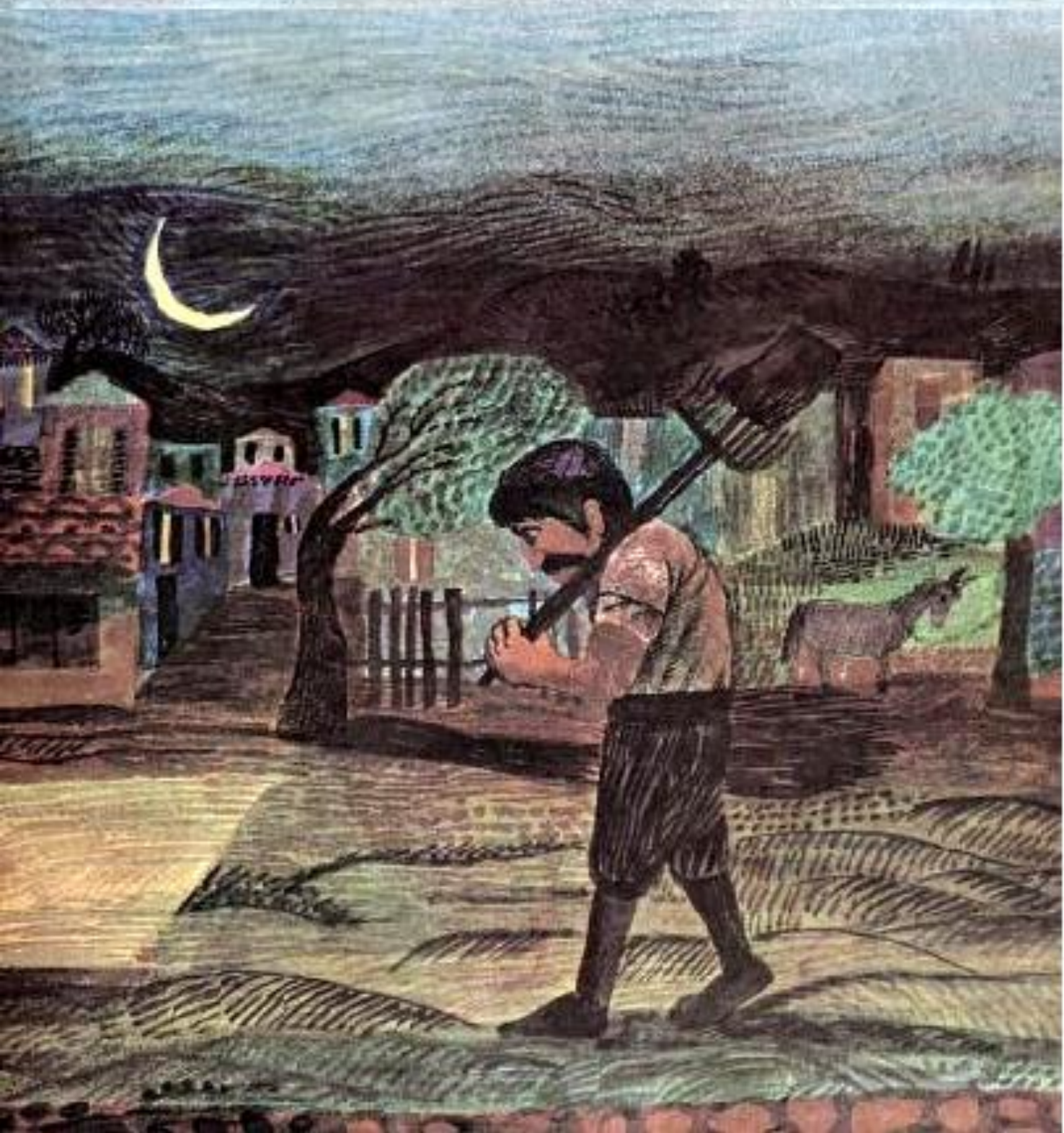

एक दिन यानिस ने अपने परिवार की ज़िन्दगी को बेहतर करने की सोची. इसके लिए उसे अपना मुल्क छोड़कर दूर देश जाना पड़ा क्योंकि विदेश में ज्यादा और बेहतर नौकरियां थीं.

यानिस ने अपने परिवार से विदा ली. उसने यह भी वादा किया कि पर्याप्त कमाई करने के बाद वो घर वापिस लौटेगा. तब वो परिवार की ज़रूरतों को अच्छी तरह पूरा कर पायेगा.

अगले दिन यानिस अपने लम्बे सफ़र पर रवाना हुआ.

उसने तीन हफ्ते पैदल यात्रा की. अंत में वो टर्की की पूर्व राजधानी - कांस्टेंटीनोपिल पहुंचा.

उस बड़े शहर में यानिस ने बहुत कोशिश की पर उसे कोई नौकरी नहीं मिली. उस जैसे वहां पर बहुत से लोग थे जो काम की तलाश में आए थे. फिर किसी ने यानिस को खबर दी. एक रईस आदमी को एक नौकर की सख्त ज़रूरत थी. यानिस उस रईस से मिलने गया.

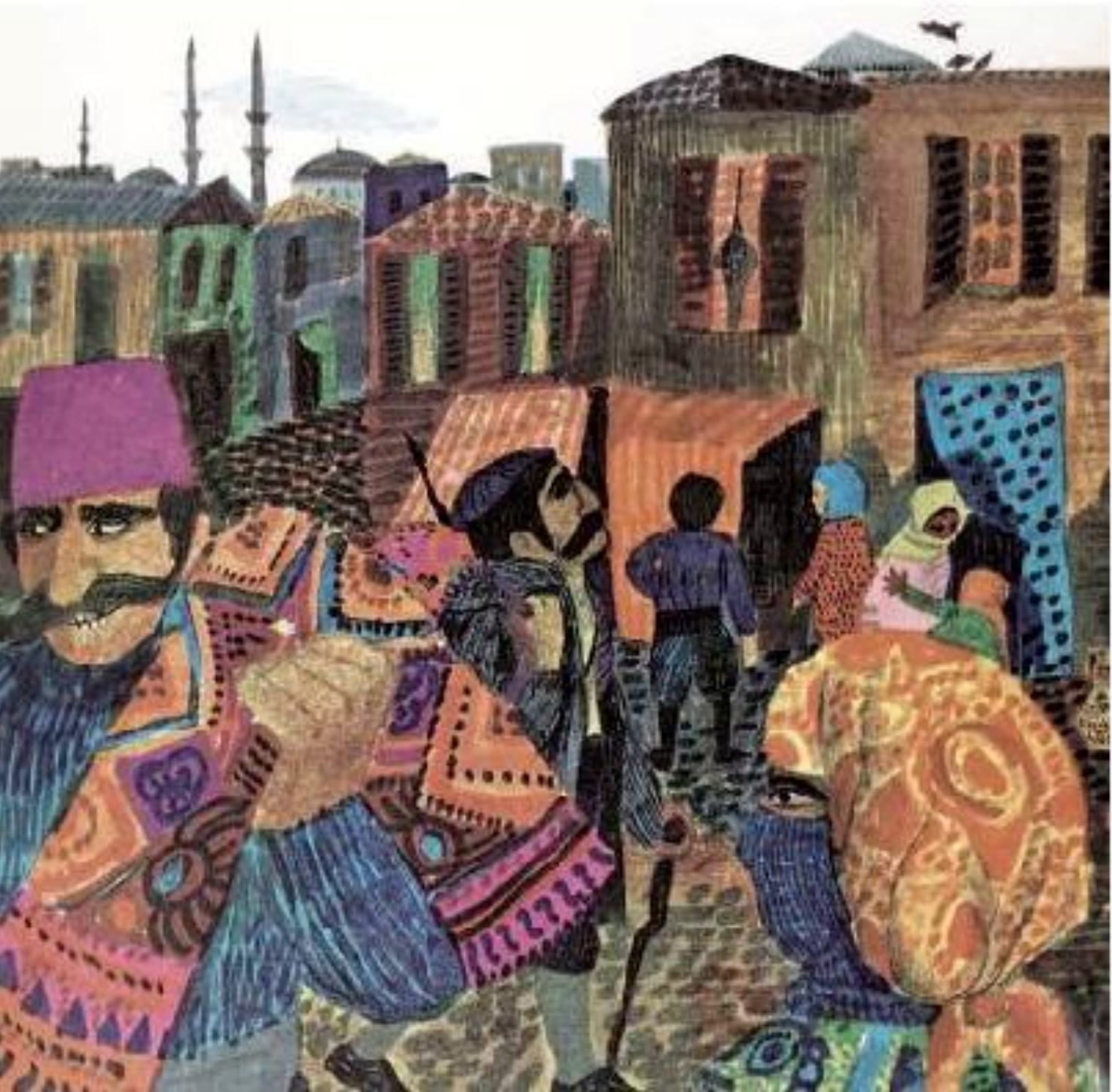

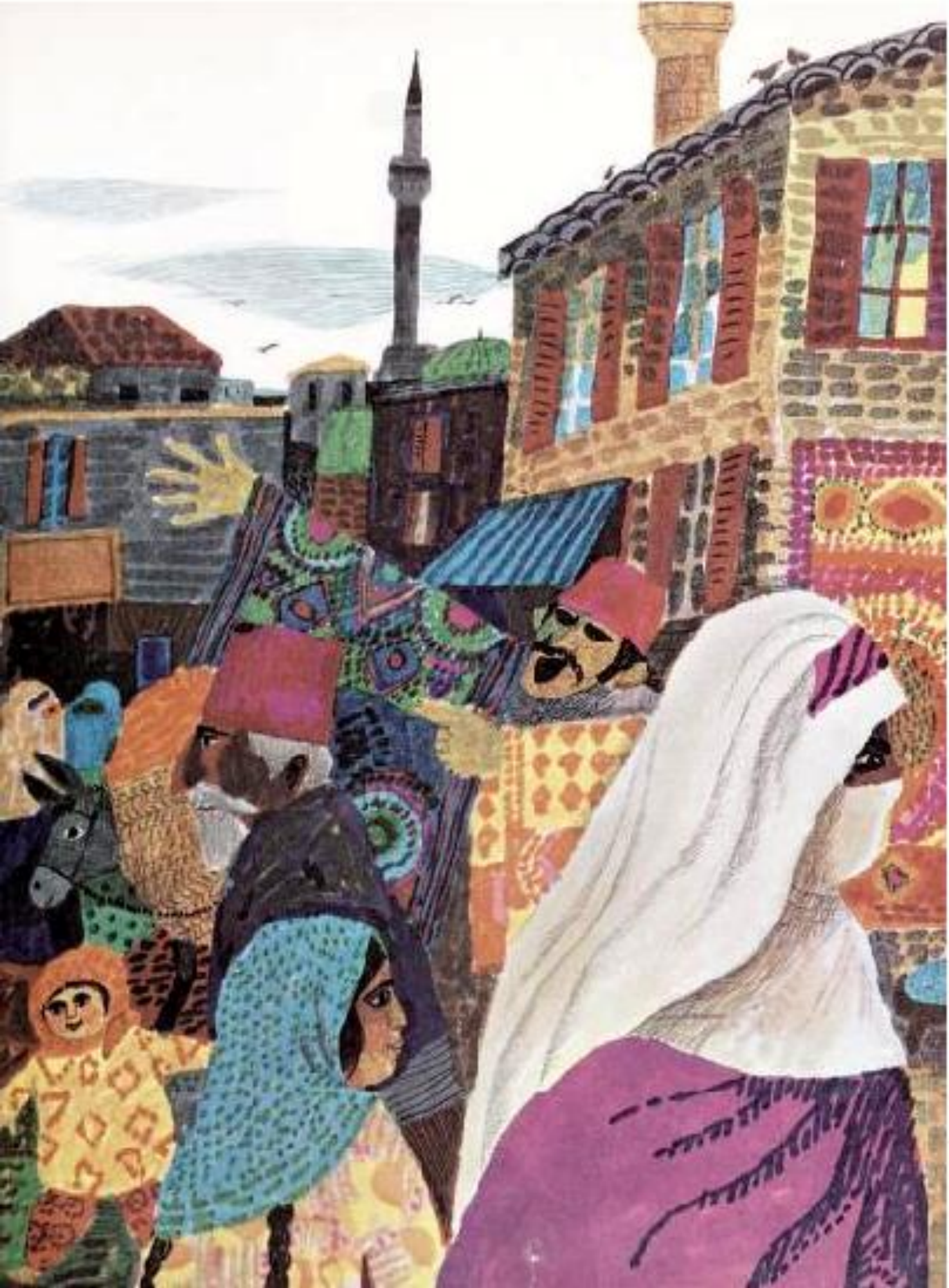

उस बूढ़े रईस को यानिस बहुत पसंद आया और उसने उसे तुरंत नौकरी पर रख लिया. यानिस ने बड़ी वफ़ादारी और इमानदारी से अपने मालिक की सेवा की. इसके लिए यानिस को खाना-पीना और रहने की जगह मिली, पर उसकी तनख्वाह मालिक ने अपने पास ही रखी. मालिक ने यानिस से कहा कि एक दिन वो उसे इकट्ठी तनख्वाह देगा.

यानिस को अपने अभी की हालात, पहले की स्थिति से अच्छे लगे. इसलिए वो ख़ुशी-ख़ुशी और मेहनत से अपना काम करता रहा.

इस तरह दस साल बीत गए. यानिस को अपने परिवार की खूब याद सताने लगी. फिर एक दिन यानिस ने घर लौटने का निश्चय किया. उसने अपने मालिक को घर लौटने की बात बताई.

“तुमने मेरी बहुत खिदमत की है, यानिस,” रईस ने कहा. “यह लो अपनी कमाई के तीन सोने के सिक्के.” साथ में रईस ने यानिस को यात्रा के लिए अपनी शुभ-इच्छा भी दी.

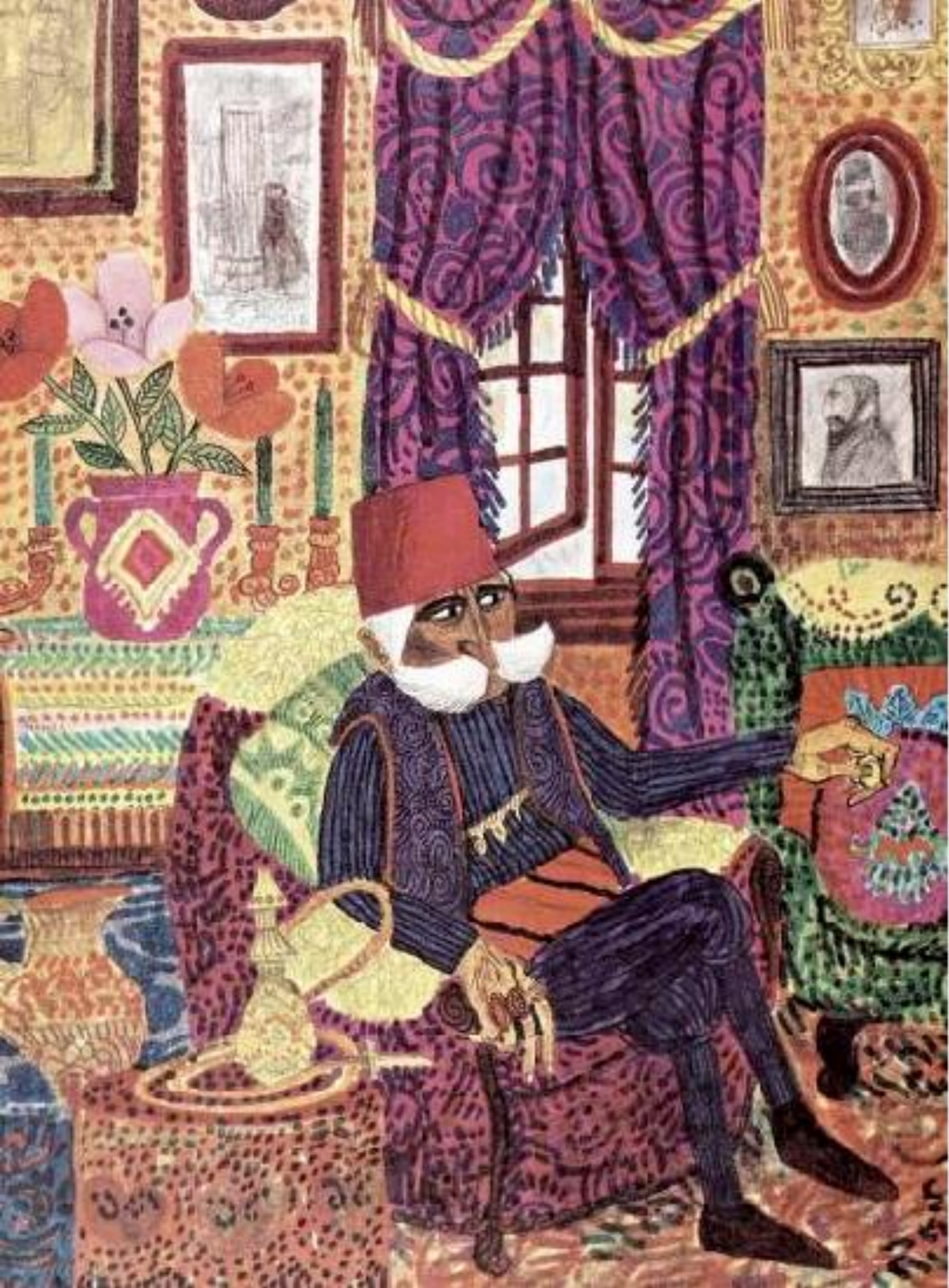

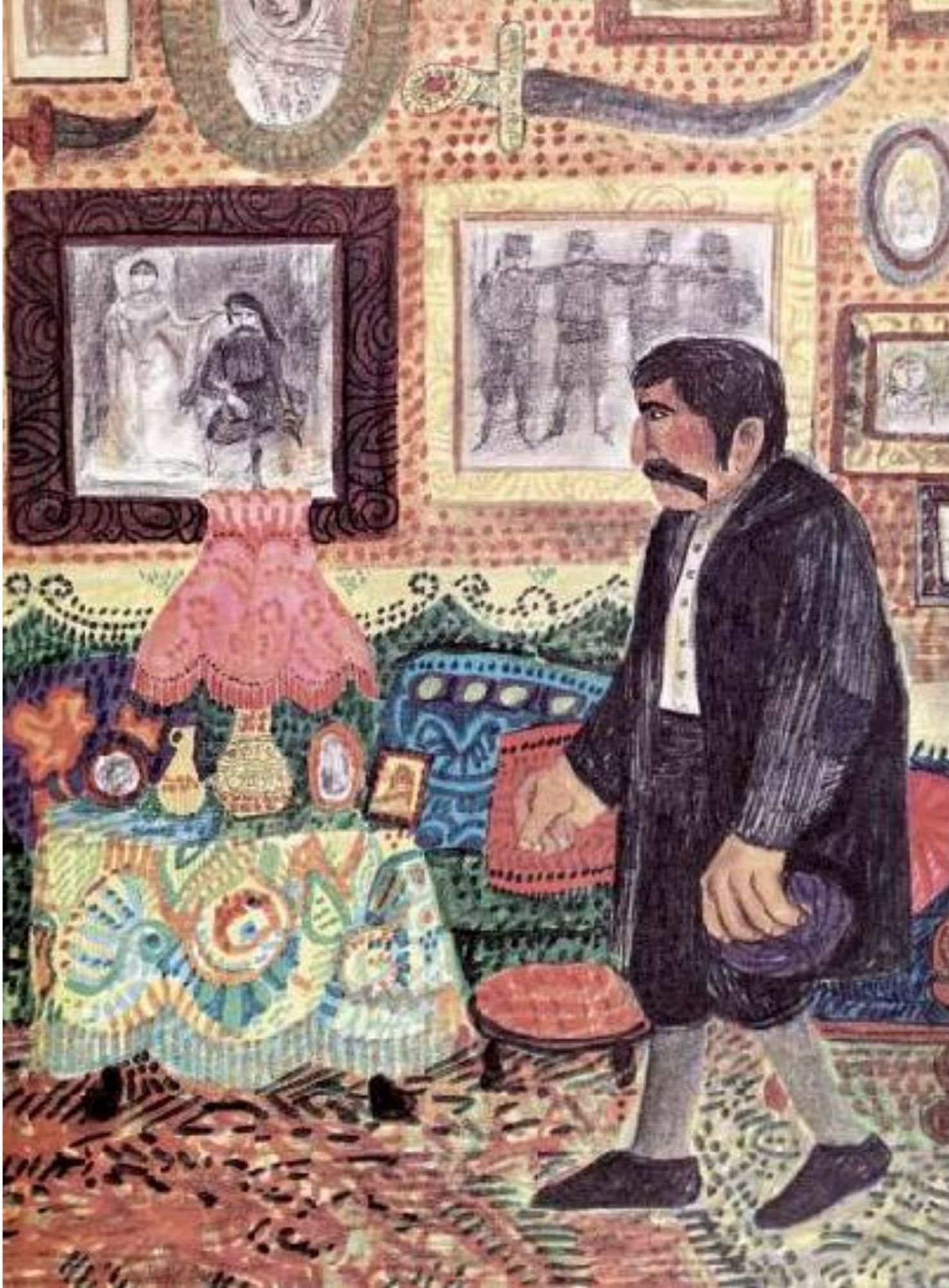

यानिस को पहले तो यकीन नहीं हुआ. दस बरस की नौकरी के लिए इतने कम पैसे! पर क्योंकि यानिस उसके बारे में अब कुछ नहीं कर सकता था इसलिए उसने सोने के वो सिक्के संभालकर रखे और अपने मालिक से अलविदा कहा.

जैसे ही यानिस जाने को हुआ, उसके मालिक ने उसे वापिस बुलाया.

"अगर तुम मुझे सोने का एक सिक्का वापिस दोगे, तो मैं तुम्हें एक बहुत काम की सलाह दूंगा."

वैसे यानिस को सलाह की कोई ज़रुरत नहीं थी. वो मना करना चाहता था, पर एक आज्ञाकारी नौकर की हैसियत से उसने मालिक को सोने का एक सिक्का लौटा दिया.

"याद रखना," मालिक ने कहा. *"जिस चीज़ से तुम्हारा कुछ लेना-देना न हो, उसके बारे में कुछ पूछताछ मत करना."*

"ठीक है, मालिक," यानिस ने कहा.

अब जब यानिस जाने लगा तो रईस ने उसे दुबारा वापिस बुलाया.

"मुझे एक और सोने का सिक्का दो, फिर मैं तुम्हें एक और बहुत काम की सलाह दूंगा."

यानिस हिचकिचाया. क्या वो सिर्फ एक सोने का सिक्का लेकर घर वापिस लौटेगा?

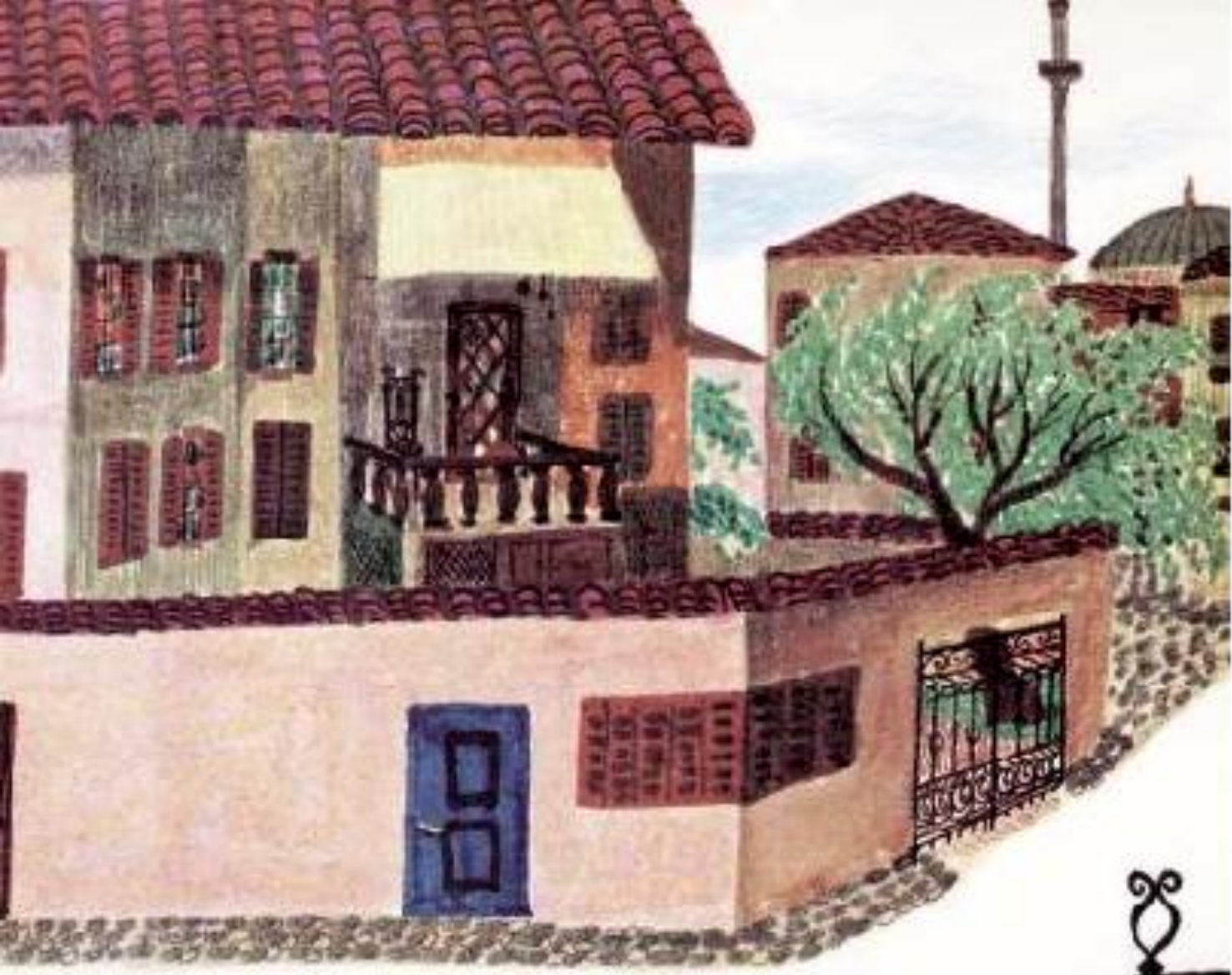

बड़ी बेदिली से और झिझकते हुए यानिस ने दूसरा सिक्का भी मालिक को दिया. उसके बाद मालिक ने उससे कहा, *"एक बार जो रास्ता चुनो उसे बाद में मत छोड़ना!"*

यानिस ने मालिक से वो करने का वादा किया और फिर वो घर वापिस जाने को तैयार हुआ. पर तभी उसे फिर से अपने नाम की आवाज़ सुनाई दी.

“यानिस तुम मुझे अपना आखिरी सोने का सिक्का भी दो, फिर मैं तुम्हें एक और बहुत काम की सलाह दूंगा.”

तीसरी बार भी गरीब यानिस से मना नहीं किया गया.

“देखो याद रखना,” मालिक ने यानिस से कहा. *“रात को अगर तुम्हें गुस्सा आए तो उसे अगली सुबह तक दबाकर रखना.”*

“मैं आपकी बताई बातों को याद रखूंगा मालिक,” यानिस ने कहा. उसके बाद यानिस ने अपने घर का रास्ता पकड़ा. अब उसकी जेब में दस साल की कड़ी मेहनत के बाद एक फूटी कौड़ी तक नहीं थी. वो घर जाकर अब क्या मुंह दिखायेगा?

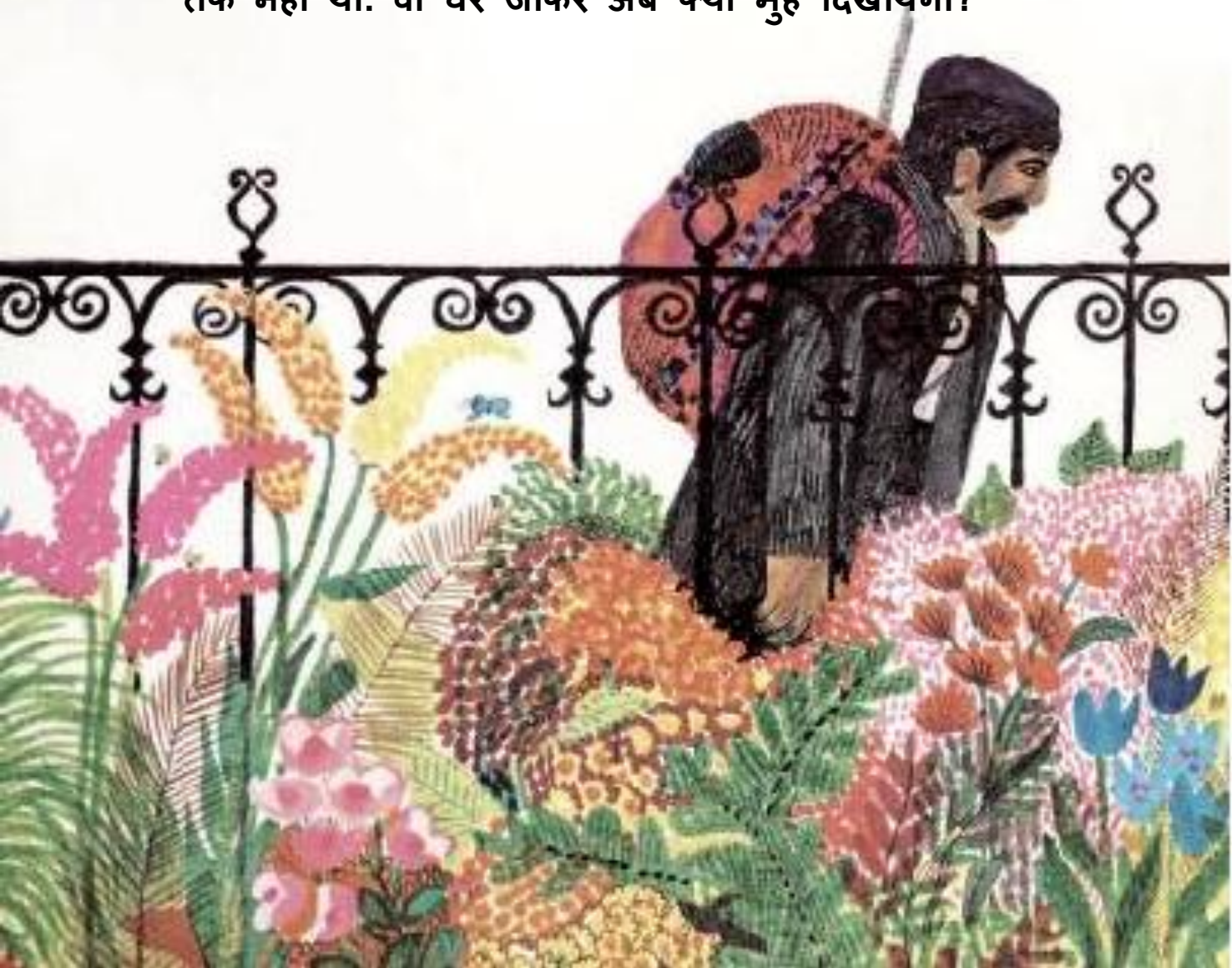

कुछ देर सफ़र करने के बाद यानिस को एक बहुत बड़ा पेड़ दिखाई दिया. पेड़ पर एक हब्शी बैठा था और वो पत्तियों पर सोने की मुहरें चिपका रहा था. यानिस को यह नज़ारा काफी अजीब लगा. पर तभी यानिस को अपने मालिक की बताई पहली सलाह याद आई. इसलिए बिना कुछ कहे या पूछे यानिस अपने रास्ते आगे बढ़ा.

दस कदम आगे चलने के बाद हब्शी ने यानिस को वापिस बुलाया.

"देखो पिछले एक सौ सात साल से मैं इन पत्तियों पर मोहरें चिपका रहा हूँ," उसने कहा. "आजतक जितने लोग भी इस पेड़ के नीचे से गुज़रे हैं उनमें तुम ऐसे पहले इंसान हो, जिसने रुककर मुझ से मेरे काम के बारे में कुछ नहीं पूछा."

“मुझे आपके काम से कुछ लेना-देना ही नहीं था,” यानिस ने कहा.

यानिस का जवाब सुनकर हब्शी खुश हुआ, “इस नेक व्यवहार के लिए तुम्हें कोई पुरुस्कार मिलना चाहिए.”

फिर हब्शी ने पेड़ को हिलाया. फिर क्या हुआ? सोने की मोहरें बारिश की बूंदों जैसी पेड़ से बरसने लगीं.

“मेरे दोस्त, इन सोने की मोहरों को तुम ले जाओ. यह तुम्हारे बहुत काम आएँगी.”

अपनी इस खुशकिस्मती पर यानिस बहुत खुश हुआ. उसने अपनी सभी जेबों में मोहरे भरीं. वो जितनी मोहरें उठा सकता था, उसने उन्हें अपनी थैली में भरीं. उसके बाद यानिस ने हब्शी का शुक्रिया अदा किया. फिर वो अपने मालिक की अच्छी सलाह के बारे में सोचता हुआ आगे बढ़ा.

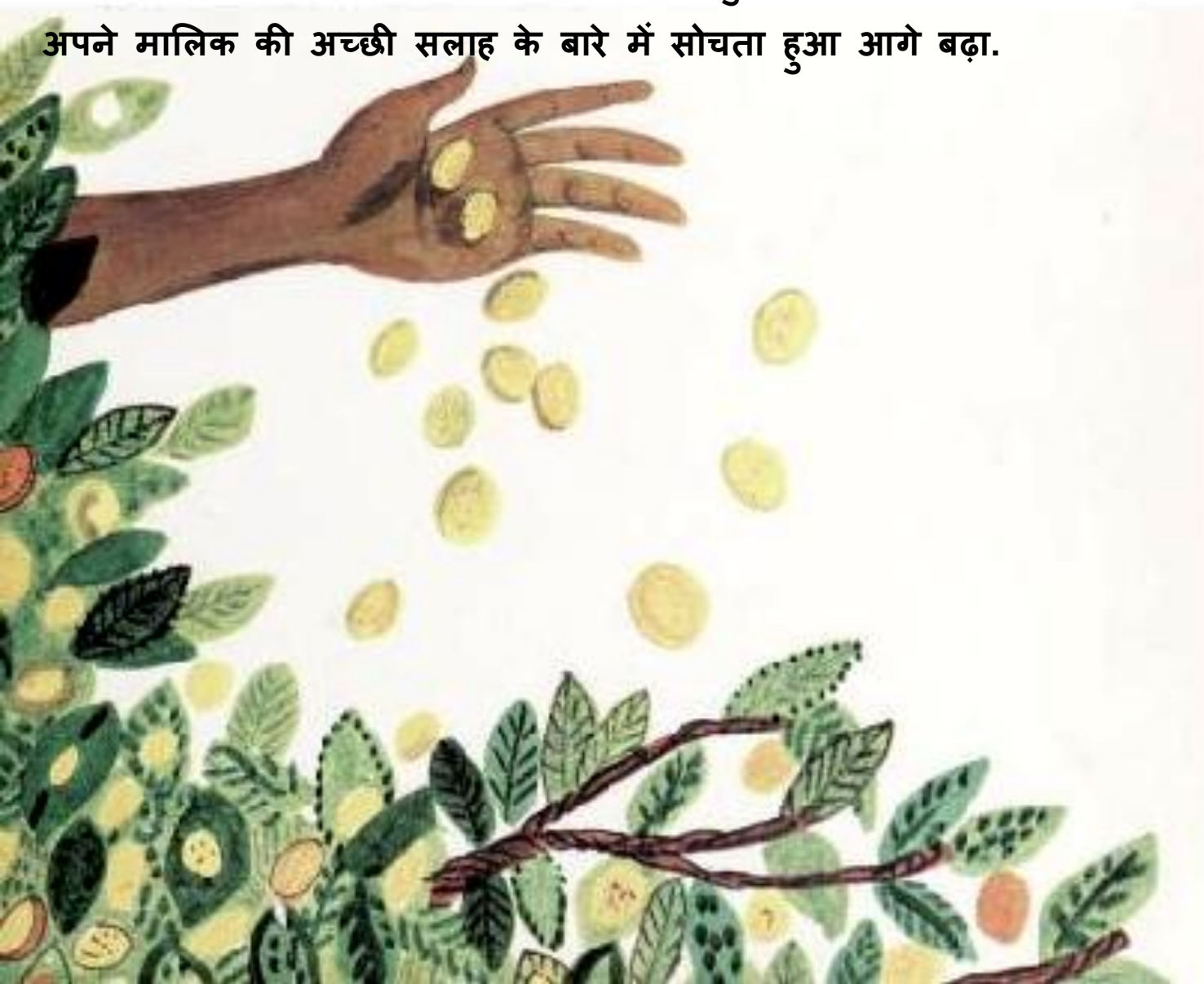

कुछ दिनों के सफ़र के बाद यानिस को खच्चरों की एक लम्बी कतार दिखी. साथ में खच्चरों के तीन मालिक भी थे. यह कारवां भी उसी दिशा में जा रहा था जिसमें यानिस को जाना था. यानिस अब थक चुका था. इसलिए उसने उन लोगों से सुस्ताने के लिए एक खच्चर पर बैठने की इजाज़त मांगी.

"ज़रूर बैठो," खच्चरों के मालिक ने कहा. "उनपर वैसे ही काफी भार लदा है. इसलिए एक इंसान का और भार ढोने से उन्हें कोई ख़ास फर्क नहीं पड़ेगा."

फिर यानिस एक खच्चर पर आराम से बैठ गया. कारवां धीरे-धीरे आगे बढ़ा.

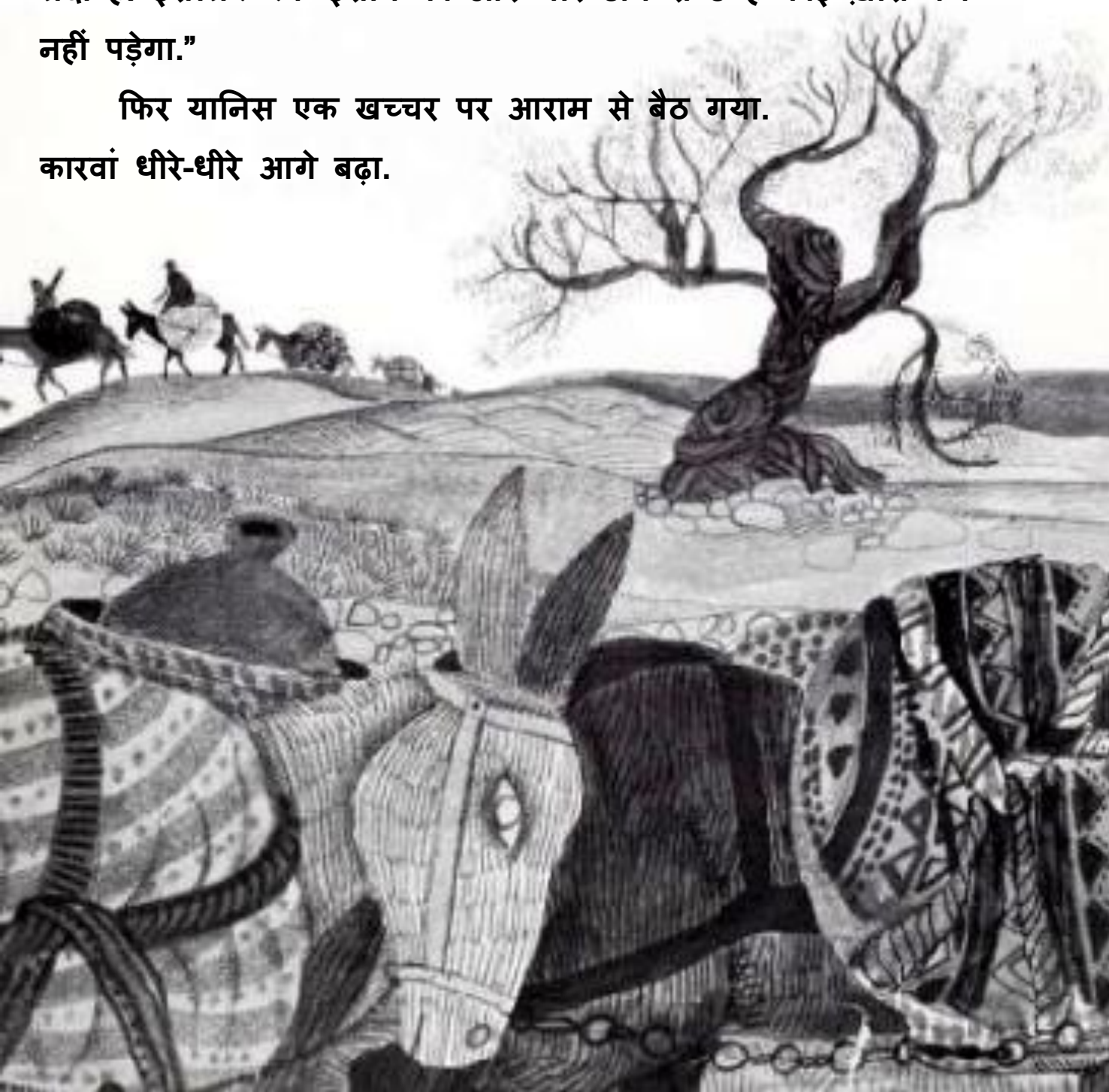

कुछ देर बाद एक सराय आई और खच्चरों के मालिकों ने वहां रुकने का मन बनाया. उन्होंने यानिस को भी सराय में अन्दर आने का निमंत्रण दिया. पर तभी यानिस को अपने मालिक की बताई दूसरी सलाह याद आई. उसने जो रास्ता पकड़ा था वो अब उसे छोड़ना नहीं चाहता था.

"आप लोग जाएँ. मैं यहीं रूककर आपके खच्चरों की रखवाली करूंगा," उसने कहा. फिर यानिस वहीँ बैठकर उनके लौटकर आने का इंतज़ार करने लगा.

पर जैसे ही वो तीनों लोग सराय में घुसे एक जोर का भूकंप आया. सराय जोर से हिली और पूरी तरह ढह गई.

सराय के अन्दर सभी लोग दफ़न हो गए.

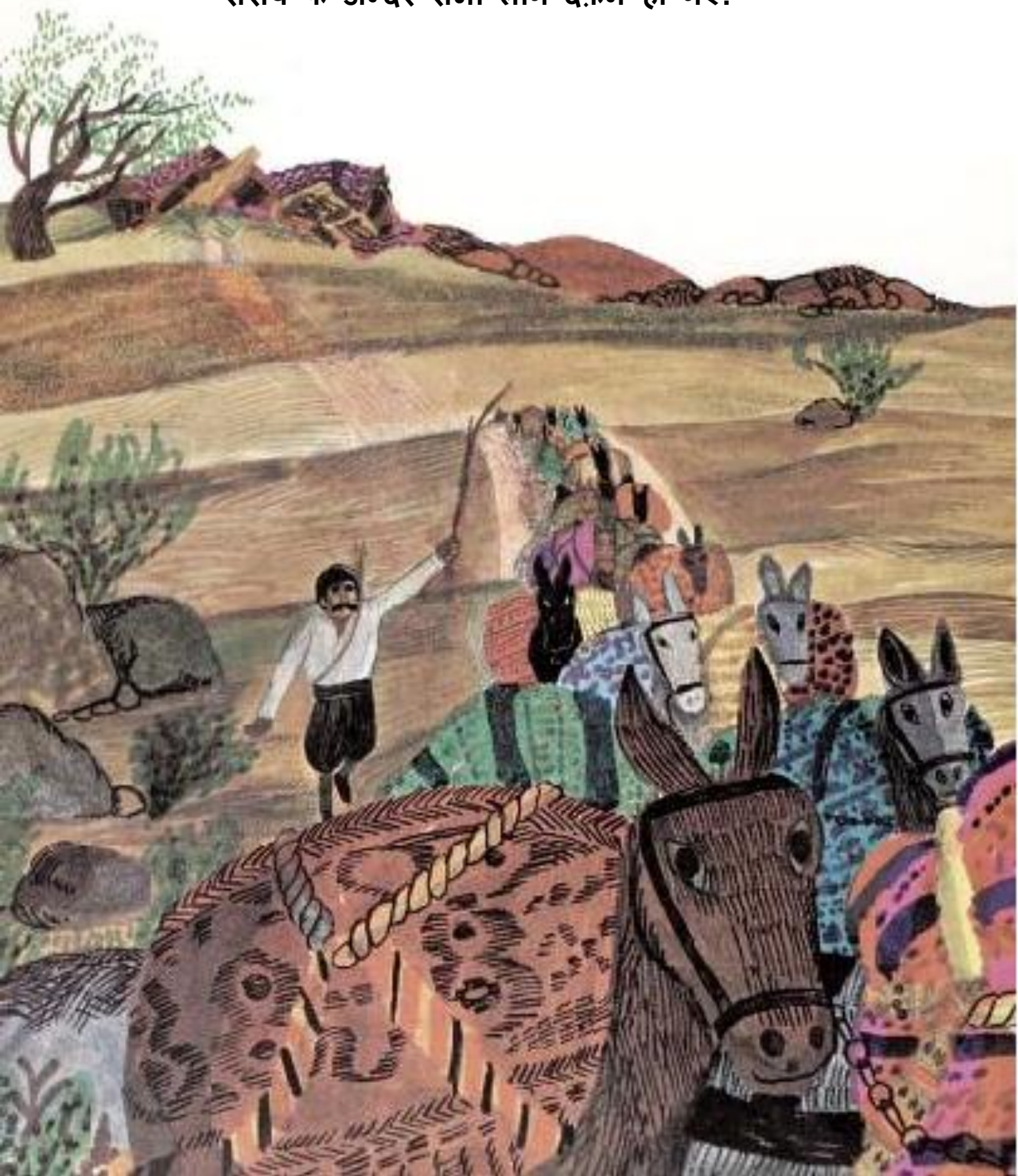

यानिस खुश था कि उसने अपने मालिक की बात याद रखी थी और उसपर अमल किया था. फिर यानिस ने खच्चरों को हांका और वो अपनी यात्रा पर आगे बढ़ा.

तीन दिन सफ़र करने का बाद अंत में यानिस अपने गाँव पहुंचा. वो अपने पुराने गाँव की सड़कों और घरों को देखकर बहुत खुश हुआ. उसने ख़ुशी-ख़ुशी अपने घर का दरवाज़ा खटखटाया.

जब दरवाज़ा खुला तो उसकी बीबी उसके सामने खड़ी थी. इतने सालों के बाद बीबी उसे एकदम पहचान नहीं पाई. यानिस ने भी उसे नहीं बताया कि वो कौन था.

“इतनी रात गए मैं आपको परेशान करने के लिए माफ़ी चाहता हूँ,” उसने कहा. “पर क्या मेरे खच्चर और मैं एक रात के लिए यहाँ आराम कर सकते हैं?”

“मैं आपको अपने घर में आने की इजाज़त तो नहीं दे सकती,” औरत ने कहा. “पर घर के बाहर मैदान है और एक शेड है जहाँ आप आराम कर सकते हैं.”

यानिस खुद पर हंसा. उसने अपने खच्चरों को बाँधा. अगले दिन जब वो औरत उसे पहचानेगी तो उसे कितना ताज्जुब होगा?

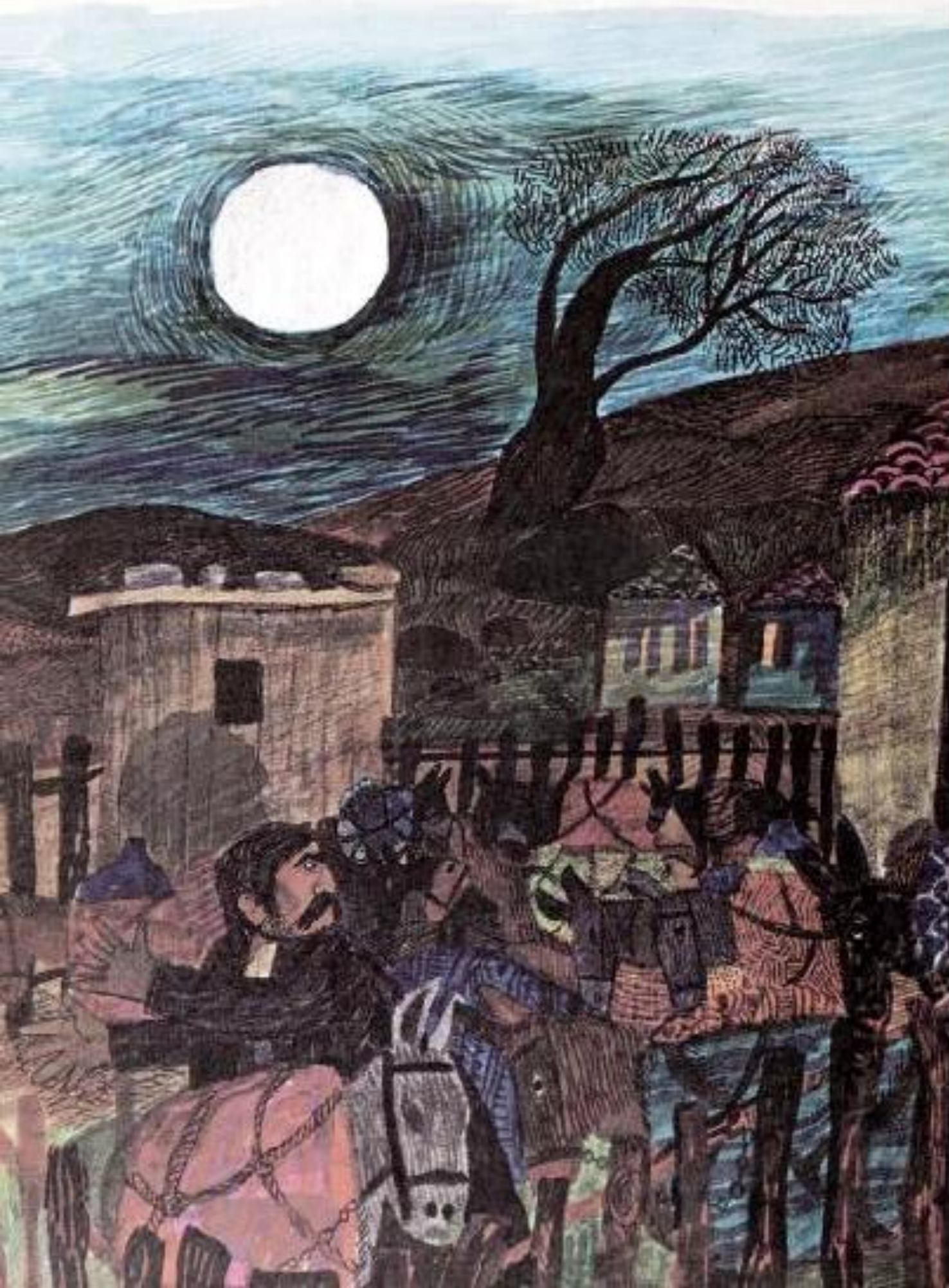

अचानक यानिस को घर में एक आदमी घुसता हुआ दिखा. उसे देखकर यानिस की ख़ुशी भयंकर रोष में बदल गई.

"क्या मेरी पत्नी मेरा इंतज़ार करते-करते थक गई और उसने दूसरे आदमी से शादी कर ली," यानिस ने सोचा.

यानिस ने अपनी बन्दूक उठाई और वो अपने घर के दरवाज़े की ओर बढ़ा. तभी उसे अपने मालिक की तीसरी सलाह याद आई. उस सलाह को याद करके यानिस ने सुबह तक इंतज़ार करने की सोची.

पूरी रात यानिस जागता रहा. सुबह होते ही, मुर्गे के बांग देने से पहले ही उसकी आँख खुल गई और वो खच्चरों को दाना डालने के लिए बाहर आया. उसे घर के अन्दर से आवाज़ भी आई. उसका मतलब था कि उसकी पत्नी भी जग चुकी थी.

कुछ देर बाद अचानक घर का दरवाज़ा झटके के साथ खुला. दरवाज़े पर वो आदमी खड़ा था जिसे उसने पिछली रात देखा था.

“देखो माँ, अब मैं काम पर जा रहा हूँ,” उसने कहा. “दोपहर के खाने के लिए मैं तुम्हें कुछ लोबिया भेजूंगा.”

फिर यानिस ने एक लम्बी साँस ली. वो आदमी उसका अपना ही बेटा था जो दस साल में अब इतना बड़ा हो गया था! गनीमत थी कि यानिस ने पिछली रात अपने बेटे को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया. फिर यानिस ने दौड़कर अपने बेटे को गले लगाया, और उसे अपने बारे में बताया.

फिर दोनों बाप-बेटे मिलकर घर के अन्दर गए. वहां पर ख़ुशी-ख़ुशी पूरे परिवार का मिलन हुआ.

उसके बाद यानिस ने सोने की मुहरों वाली थैली खोली, और खच्चरों पर से सामान उतारा. उस दिन के बाद से पूरी ज़िन्दगी यानिस और उसके परिवार को किसी चीज़ की कमी नहीं महसूस हुई.

अलीकी ने बच्चों की सैकड़ों पुस्तकें लिखी हैं और उनके लिए सुन्दर चित्र बनाये हैं. वो अपने पति फ्रान्ज़ ब्रांडीनबर्ग के साथ न्यू यॉर्क सिटी में रहती हैं. उनके दो बच्चे हैं - जेसन और अलेक्सा.